पानी रहित स्थान

पानी जीवन का प्रतीक है। जहाँ पानी नहीं है, वहाँ जीवन भी नहीं है—यह सत्य सभी जानते हैं।… ऊपर की आकाशगंगाओं में ग्रहों में पानी नहीं है, और यही उनमें जीवन न होने का एक कारण है… इसी तरह यह पृथ्वी भी, जिस पर हम रहते हैं, पानी से उत्पन्न हुई थी।

2 पतरस 3:5-6
“क्योंकि वे यह देखकर भी नहीं जानते कि आकाश पहले से ही
उपस्थित थे, और पृथ्वी पानी से उत्पन्न हुई थी और पानी में, परमेश्वर के वचन द्वारा; और उस समय की पृथ्वी पानी से डूबी
हुई थी और नष्ट हो गई थी।”

उत्पत्ति 1:1-2
“आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी को बनाया। पृथ्वी अब
भी शून्य और रिक्त थी, और अंधकार जल की गहराइयों पर था; और परमेश्वर की आत्मा जल की सतह पर तैर रही थी।”

इसलिए, किसी भी स्थान पर जहाँ पानी नहीं है, वह मृत्यु का निवासस्थान है। इसी तरह आत्मा में भी, जीवन के पानी होते हैं।

जिनके पास यह नहीं है, उनके हृदय सूखे और निर्जल होते हैं, मृत्यु का निवासस्थान बन जाते हैं। और इसलिए पवित्र आत्मा उस जगह नहीं उतर सकता जहाँ सूखा है; वह केवल पानीयुक्त स्थान पर उतरता है, जैसे उसने पहले सृष्टि के समय जल की सतह पर उतर कर सृष्टि आरंभ की थी।

पानी और आत्मा हमेशा साथ चलते हैं।

1 यूहन्ना 5:8
“और पृथ्वी पर भी तीन गवाह हैं—पानी, आत्मा और रक्त; और ये
तीन एक हैं।”

इसलिए, यह बहुत महत्वपूर्ण है कि बपतिस्मा (सही तरीके से) पानी में किया जाए, सिर्फ छींटे मारने से नहीं, ताकि पवित्र आत्मा मनुष्य के भीतर प्रवेश कर सके। क्योंकि, जैसा कि बाइबल कहती है, पवित्र आत्मा पहले सृष्टि में स्रोत या नमी पर नहीं उतरी, बल्कि पूरे जल की सतह पर।

जो कोई अपने जीवन को पूरी तरह से यीशु मसीह को सौंप देता है, पापों को छोड़ देता है और सही बपतिस्मा में पानी में डूबता है, वह जीवन के जल से भरा हुआ होता है। उसका हृदय ऊपर तक पानी से भरा

होता है, जीवन के जल के गहरे जल स्रोत उस पर उतरते हैं, और पवित्र आत्मा उस पर उतरकर नई सृष्टि शुरू करता है। वह पुनर्जन्मित होता है और नया प्राणी बनता है।

यूहन्ना 7:38-39
“जो मुझ पर विश्वास करता है, जैसा कि शास्त्र कहता है, उसके
भीतर से जीवंत पानी की नदियाँ बहेंगी। यह वह आत्मा का अर्थ
है जिसे उन लोगों को प्राप्त होगा जिन्होंने उस पर विश्वास किया; क्योंकि आत्मा अभी नहीं दिया गया था क्योंकि यीशु अभी महिमा प्राप्त नहीं कर चुके थे।”

इस प्रकार हम देखते हैं कि जिसने पुनर्जन्म प्राप्त किया है, उसका मन जलयुक्त और जीवन से भरा होता है, और पवित्र आत्मा का निवास स्थान वहाँ है।

जो कोई यीशु मसीह पर विश्वास नहीं करता और पवित्र आत्मा को स्वीकार नहीं करता, उसका हृदय सूखा और निर्जल होता है। और अगर पवित्र आत्मा उस पर नहीं उतरता, तो वहां अन्य आत्माएँ उतरती हैं—जो अक्सर शैतानी आत्माएँ होती हैं।

मत्ती 12:43-45

“जब एक अशुद्ध आत्मा किसी मनुष्य से निकलती है, वह पानी रहित स्थानों में घूमती है, आराम की जगह खोजती है और नहीं पाती।
तब वह कहती है, ‘मैं अपने घर लौटूँगा जहाँ से निकली थी।’ और
वह लौटकर पाती है कि घर खाली, झाड़ा हुआ और सजाया हुआ है। तब
वह सात अन्य बुरी आत्माओं को अपने साथ ले आती है, और वे वहाँ निवास करती हैं। और उस मनुष्य की स्थिति पहली से भी खराब हो जाती है।”

यह स्पष्ट करता है कि जो किसी ने यीशु मसीह को नहीं स्वीकारा, उसने बपतिस्मा नहीं लिया, और पवित्र आत्मा को स्वीकार नहीं किया, उसका हृदय एक “पानी रहित” स्थल है, जहाँ शैतान और उसकी आत्माएँ निवास करती हैं।

सत्यानुसार, जो व्यक्ति आज अपने जीवन को यीशु मसीह को सौंपता है, बपतिस्मा लेता है और पवित्र आत्मा प्राप्त करता है, उसके भीतर से बुराइयाँ निकल जाती हैं। यह जरूरी नहीं कि तुरंत परिणाम दिखाई दें; समय के साथ व्यक्ति परिवर्तन को महसूस करता है।

इसलिए अपने जीवन को यीशु मसीह को सौंपो, बपतिस्मा लो और पवित्र आत्मा को प्राप्त करो, ताकि जीवन का जल भीतर से बहना शुरू हो और तुम्हारा शरीर शैतानी आत्माओं का निवासस्थान न बने।

[illegible]

Share on:
WhatsApp

Print this post